Volume-5, Issue-1, January -2016 • ISSN No 2277 - 8160

GLOBAL JOURNAL FOR RESEARCH ANALYSIS International

Research Paper | Education

egkfo|ky; esa v/;;ujr foKku ,oa dyk ladk; ds Nk= o Nk=kvksa esa v/;;u ds izfr fujk'kk dk rqyukRed v/;;u djuk

Nisha Shrivastava — HOD (Education Department), Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

Astha Sijaria — Asst.Prof.Education Dept. Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg (C.G.)

Mahalaka Tarannum — Asst.Prof.Education Dept. Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान व कला संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना है। महाविद्यालय के छात्र व छात्राओं में निराशा का मापन करने के लिए डॉ. बी. एम. दीक्षित एवं डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित, निराशा की प्रतिक्रिया मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु महाविद्यालय में अध्ययनरत् कुल 200 छात्र व छात्राओं का चयन किया गया जिसमें विज्ञान संकाय के 100 छात्र व छात्राएँ तथा कला संकाय के 100 छात्र व छात्राओं का चयन किया गया है। चयनित कला व विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा की प्रतिक्रिया का परीक्षण कर उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये। इस आधार पर कला व विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओ में अध्ययन के प्रति निराशा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विज्ञान संकाय की तुलना में कला संकाय के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निराशा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

KEYWORDS :

iLrkouk

किशोर व किशोरियों की कियाओं व उनके व्यवहार में बहुत से परिवर्तन का प्रमुख कारण किशोर व किशोरियों में उत्पन्न होने वाली निराशा है यह किशोर व किशोरियों में उत्साह व विकार उत्पन्न करती है जो उनके लक्ष्य का निर्धारण करने में सहायता प्रदान करती है और लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है। निराशा से अभिप्राय कुंठा व हताषा से है। निराशा वह मानसिक स्थिति है जो लगातार चलते हुए किसी प्रेरित व्यवहार या किसी सुसंगठित किया योजना की संसिद्धि या पूर्ण होने से पूर्व ही उसमें अस्थायी व स्थायी तौर पर कोई अवरोधन या बाधा उत्पन्न हो जाये। जैसे प्रत्युत्तर किया, नाड़ी गति, हाव–भाव, स्वीकारोक्ति आदि। ध्येय की प्राप्ति में विलंब विशेषकर बाल्यावस्था में निराशा का मुख्य कारण है आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राणी जितना ही दूसरों पर आश्रित होगा, विलंब एवं परिणाम स्वरूप निराशा का स्तर उतना ही बढ़ता जायेगा। अवरोध या बाधा उत्पन्न करने वाली परिस्थितियॉं यदि अधिक शक्तिशाली है तो निराशा की मात्रा अधिक होगी।

Rosehweing (1941) ने कहा कि निराशा तब होती है जब इंसान को किसी बहुत जरूरी काम में रूकावटे आ जाने पर उत्पन्न होती है और वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है। वुड एवं वुड (1978) के अनुसार समायोजी व्यवहार से तात्पर्य विचारण एवं किया के माध्यम से किया गया व्यक्ति के उस प्रयास से होता है जिसके द्वारा वह भार डालने या अपने ऊपर हावी होने वाले निपटता है। सिन्हा, विल्सन, वाटसन (2000) ने भारतीय और कनाडा के किशोरों के बीच निराशा का समायोजन का अध्ययन किया और अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि भारतीय बच्चों में निराशा कम पायी गयी। कनेडियन बच्चों की अपेक्षा शेरिना और रामपाल, केन्सन (2004) ने पूर्व स्नातक मेडिकल विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक निराशा के बारे मे जानकारी रखते हुए बताया कि निराशा मेडिकल के विद्यार्थियों में ज्यादा पाई गयी, क्योंकि उनका पाठ्यक्रम उनमें उदासी व शक्ति हीनता से जुड़ा था। सिन्हा (2004), डॉ. मुदिया भट्नागर (2012) के अनुसार निराशा किशोर व किशोरियों में अधिक पायी जाती है जिसके फलस्वरूप वह अपनें लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते है। और निराशा उन्हे निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। जॉनसन, राबेट, बेबरली एल बोवर (2002) ने सामुदायिक कॉलेजों में प्रौढ़ महिला छात्राओं में निराशा प्रबंध का अध्ययन किया और अध्ययन के पश्चात पाया कि व्यवहार निराशा के कारण ही उत्पन्न होता है। एगोला और हेनरी (2000) ने गैर विद्याथियों के बीच शैक्षिक निराशा का मूल्यांकन किया अध्ययन में पाया कि अधिक कार्य का भार, अभिप्रेरणा की कमी, कक्षा का अधिक होना और नौकरी की समस्या स्नातक के बाद निराशा के प्रमुख कारक होते है जिससे किशोंरो में निराशा उत्पन्न होती है। अतः प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान व का संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन दुर्ग जिले में शोध हेतु विषय का चयन किया हैं।

mn~ns';

1. महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना।
2. महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना।
3. महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना।
4. महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्रों में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना।
5. महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का अध्ययन करना।

ifjdYiuk

H1परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

H2परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

H3परिकल्पना :– महाविद्यायल में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

H4परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्रों में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

H5परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययपरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

'kks/k izfof/k

प्रतिदर्श :– दुर्ग जिले के कला व विज्ञान संकाय के 10 महाविद्यालयों में से 5 महा. विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। 5 महाविद्यालयों में से 200 छात्र व छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। महाविद्यालयीन कला व विज्ञान के छात्र व छात्राओं पर प्रतिदर्श का चयन किया गया है। महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के 100 कला संकाय के विद्यार्थियों का चयन किये गये है। विज्ञान संकाय के 100 विद्यार्थियों में से 50 छात्र व 50 छात्राओं का चयन किया गया। तथा कला संकाय के 100 विद्यार्थियों में से 50 छात्र व 50 छात्राओं का चयन किया गया है। सभी चयनित छात्र व छात्राओं पर अध्ययन के प्रति निराशा की प्रतिक्रिया के परिक्षण संचालित किया गया है।

उपकरण

निराशा को मापने के लिए शोधकर्ता ने डॉ. बी. एम. दीक्षित एवं डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव द्वारा प्रतिक्रिया निराशा मापनी का चयन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान व विचलन ज्ञात कर दो समूहों के मध्य प्राप्त होने वाले प्रमाणित विचलन का टी मूल्य विधि द्वारा किया गया है।

ifjdYiuk] ifj.kke ,oa foospuk

H1 परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक – 1

महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान एवं कला संकाय के छात्र व छात्राओं में निराशा

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी–मूल्य
1.	विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में निराशा	100	104.41	14.69	2.99
2.	कला संकाय के विद्यार्थियों की निराशा	100	105.96	12.15	

df = 198, $P < 0.05$

कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के मध्य (निराशा) स्वतंत्रता की कोटी 198 के लिए 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया। परिकल्पना H1 अस्वीकृत होती है।

H2 परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

तलिका क्रमांक – 2

महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओ मे निराशा का अध्ययन

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी–मूल्य
1.	विज्ञान संकाय के छात्रों मे निराशा	50	106.36	17.48	8.68
2.	विज्ञान संकाय के छात्राओं मे निराशा	50	117.56	66.95	
	df = 98, P < 0.05				

विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं के मध्य निराशा का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H2 अस्वीकृत होती है।

भ3 परिकल्पना :– महाविद्यायल में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

तलिका क्रमांक – 3

महाविद्यालय के कला संकाय के छात्र व छात्राओ मे निराशा का अध्ययन

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी–मूल्य
1.	कला संकाय के छात्रों मे निराश	50	103.88	29.51	1.85
2.	कला संकाय के छात्राओं मे निराशा	50	105.68	17.94	
	df = 98, P > 0.05				

कला संकाय के छात्र व छात्राओं के मध्य निराशा का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अंतर नही पाया गया। अतः परिकल्पना H3 स्वीकृत होती है।

H4 परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययनरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्रों में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

तलिका क्रमांक – 4

महाविद्यालय के कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्रों मे निराशा का अध्ययन

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी–मूल्य
1.	कला संकाय के छात्रो मे निराशा	50	103.88	29.51	2.58
2.	विज्ञान संकाय के छात्रो मे निराशा	50	106.36	17.48	
	df = 98, P < 0.05				

कला संकाय एवं विज्ञान संकय के छात्रों के मध्य निराशा में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H4 अस्वीकृत होती है।

H5परिकल्पना :– महाविद्यालय में अध्ययपरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका क्रमांक – 5

महाविद्यालय के कला व विज्ञान संकाय की छात्राओ मे निराशा का अध्ययन

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	टी–मूल्य
1.	कला संकाय के छात्राओं मे निराशा	50	105.68	66.95	9.13
2.	विज्ञान संकाय के छात्राओं मे निराशा	50	117.56	17.9	
	df = 98, P < 0.05				

कला व विज्ञान संकाय के छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना H5 अस्वीकृत होती है।

fu’d’k

महाविद्यालय में अध्ययरत् कला व विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं में अध्ययन के प्रति निराशा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें यह पाया गया कि महाविद्यालय के कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में निराशा का ऋणात्मक संबंध पाया गया। अर्थात विज्ञान व कला संकाय के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निराशा का सार्थक अंतर पाया गया। तथा महाविद्यालय के कला संकाय के छात्र व छात्राओं मे अध्ययन के प्रति निराशा का धनात्मक संबंध पाया गया अतः कला संकाय के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निराशा का स्तर अधिक पाया गया।

l>ko

शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ मित्रता पूर्वक व्यवहार करना चाहिए जिससे कि विद्यार्थी अपनी समस्या पर शिक्षक से खुलकर बात कर सके तथा शिक्षक उनकी समस्या का समाधान कर सके तथा विद्यार्थियों में निराशा कम कर सकें। विद्यार्थियों पर अनावश्यक रूप से अध्ययन या किसी अन्य बातों का भार नही डालना चाहिये। विद्यार्थियों द्वारा किये गये अच्छे कार्यो के लिए उन्हे पुरस्कृत किया जाए जिससें कि उनके मन (मस्तिष्क) में सकारात्मक विचार उत्पन्न हो सके। महाविद्यालय का वातारण बालकों के प्रति जागरूक होने तथा अपने आवेग एवं संवेगों पर नियंत्रण रखने हेतु ध्यान की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। महाविद्यालय में शिक्षकों की व्यक्तित्व के साथ शिक्षण की योग्यता क्षमता एवं उनकी शैक्षिक अभिरूचि का परीक्षण कर न्यूक्ति करनी चाहिये जिससे कि वे अपने विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान कर सके व सही मार्गदर्शन दे सके, जिससे वे अपने क्षेत्र में सफल हो सके व उनमें निराशा का स्तर कम हो सके।समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भेदभाव की भावना को समाप्त कर सभी को एक समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए। व प्रत्येक व्यक्ति के साथ समानता का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। समाज व परिवार विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त करने तथा लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक होते है। विद्यार्थियों को शिक्षा का उत्तम माध्यम दिया जाना चाहिये जिससे वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके और अधिक भार न महसूम करे व निराशा मुक्त हो सके।परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है अतः पालकों को छात्र व छात्राओं को उनकी योग्यता के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करना चाहिये जिससे अपने कार्यो को प्रसन्नचित होकर सरलता पूर्वक कर सके। छात्र व छात्राओं को अध्ययन की रूचि के अनुसार विषयों के चयनमें सहयोग देना चाहिए जिससे वे अपने अध्ययन कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण कर सके।

REFERENCES

• शर्मा, आर. ए. (2015), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर लाल बुक डिपो निकट गर्वनमेंट इण्टर कालेज, बेगम ब्रिज रोड मेरठ, पेज– 24,117,154,118,198,477 • गुप्ता. बी. एन. (1998), सांख्यिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स प्रशा. कार्या. 34, लाजपत कुंज, आगरा 282002, पेज 50–51 • कपिल एच. के. (2009), अनुसंधान विधियां पुस्तक प्रकाशन एच. पी. भार्गव 4/230, कचहरी घाट आगरा (उ. प्र.) पेज – 40–50 • लाल रमन बिहारी (2007) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत पुस्तक प्रकाश रस्तोगी पब्लिकेशन के गंगोत्री शिवाजी रोज, मेरठ पेज (1–24) • आस्थाना, विपिन (2009), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, पेज 459,60,61,469. • शरीन एवं शरीन, शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, पेज 87,93,54,31,118,359,360. • पारसनाथ, अनुसंधान शिक्षण परिचय, पेज नं. 64,39,286 • कुमार आदित्य व अन्य, असामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पेज 72–74 • सिंह अरूण कुमार (2004) आधुनिक असामान्य मनाविज्ञान पुस्तक प्रकाशन, मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लोरोड, दिल्ली, पेज नं. 246–279. • माथुर एम. एस (1967), ज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा (उ. प्र.) • मल्होत्रा आर. एन. (1973), शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा • सिंह अरूण कुमार (2004), आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान पुस्तक, प्रकाशन मोतीलाल बनारतीदास, बंगलो रोड, दिल्ली, पेज (246–279) • सक्सेना स्वरूप (2007), शिक्षा के दर्शन शास्त्रीय आधार आगरा–2, राधा प्रकाशन मंदिर • सिंह अरूण कुमा (2001) सामान्य मनोविज्ञान पुस्तक प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड, दिल्ली, पेज (240) • अग्रवाल रोकश कुमार और शैलेन्द्र सिंह (2006), भारतीय तकनीकी विद्यार्थियों पर परीक्षण का निराशा Vol.&10] www.google.co